श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रीमद्भागवतसप्ताहविधिः
प्रथमे मुहूर्त्तदिने आभ्युदयिकं नांदीमुखश्राद्धं कुं॰ ॥
तदनंतरं मधुपर्केण ब्राह्मणानां वरणं कुं॰ मंडपं
कृत्वा गणपत्यादीन् ग्रहान् पूजयेत् ॥ प्रथमे स्व
स्तिवाचनम् ॥ ततः प्रतिज्ञासंकल्पं कुं॰ अप
वित्रेति पठित्वा ॥ देशकालं स्मृत्वा अमुक ॥
गोत्रोहं अमुकशर्म्माहं वेम्मोहं जन्मोहं दा
सोहं वासपद्दि वारोहं अथ मे रूप विघ्नस
म्पादके न स्वकीय कैन चित्कर्मणा स्वप्र
कृतित सम्भुहित तत्तत्करण व्यापारसा
ध्य कायिक वाचिक मानसिक पापवी
जोसेहण जन्य जनित जनिष्यमाणाने
कविध विघ्नरूप पापशान्तिपूर्वक पाप
जन्यादि फलशान्तिपूर्वकाऽधर्मरूपवि
घ्नप्राप्त्यर्थं स्वकीय तज्जन्मावाद्दितः स्वकीय
राश्यादि तस्य विषम भावस्थित रूप्यादिन
वग्रहजोन्य जनित जनिष्यमाणाऽनेकवि
धदोषविकल्पितर दोषजन्यादि अनेकवि
धदोषफलशान्तिपूर्वकरणका [illegible]
तवद्धर्मफलप्राप्त्यर्थं मेतल [illegible] ऽधिका

तद्देवताप्रसन्नतापूर्वकं कायवाङ्मनःकरणका
चरितसकलकल्मषनिरसनायानेनारभ्य श्रुतिस्मृ
तिपुराणागमप्रतिपादितउग्रफलावाप्तिपूर्वकते
याच सर्वेषां पितॄणां सद्गतिप्राप्त्यर्थं तथा चात्मा
त्मनः सपरिवारस्य राज्यकृत ग्रहकृत घोरकृ
त अग्निकृत व्याधिकृत शत्रुकृत सर्पादि
कृत भयापगाननिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यश्री
श्रीपुत्रधनधान्यपुत्रपौत्रान्वित सुखभोगका
मो भूतवर्तमानजन्मोपार्जित कायिकवाचिक
मानसिक सकलपापक्षयार्थं भविष्यदु
त्पत्तिनिवृत्तये श्रीकृष्णप्रीतये च श्रीविष्णोर्वै
लोकप्राप्तिकामः सह पितृपितामहैर्भ्रातृभि
ज्येष्ठपितृव्यकनिष्ठपितृव्यज्येष्ठभ्रातृक
निष्ठभ्रातृमित्रबंधुसुहृद्भार्याबांधवै
भिः सह श्रीभगवतो वासुदेवस्य वैकुण्ठकाह
लोकपरंमंगलपरमभगवत्तानवसाग्जल
धर्मसंरक्षणप्रकृतावतारस्य श्रीराधाकृष्ण
स्य लीलाकथानाम्नि पुराणप्रवरे निरंतापूर्वकं
स [illegible] श्रीवेदव्यासप्रणीतस्य सता
श्रीपरमभागवतस्य सप्तमंत्रानन्दनंदनस्य
राजो विष्णुरातस्य [illegible] गुरुवाचांगेच्छतो

प्र लिखत भक्त देवेन कपितां परम हंस संहि
तां अष्टादश सहस्र श्लोक संख्या परि
मितां द्वात्रिंशदुत्तर शत त्रयाध्याय युतां द्वा
दश स्कंध मितां शुक परिक्षित सूत शौ
नक संवाद प्रापितां ग्रन्थ कारि प्रेत बाधा
निवारणेन गर्जितां आद्यन्त भगवत
चरितां धर्मार्थ काम मोक्षदां गायत्र्या
लंकृतां चिन्तामणि फलप्रदां श्री
भागवताभिधां स प्राप्त
श्रवण महत् कर्म श्रेत
वेनतानि विघ्न परि समाप्ति
पूर्वक आदौ गण पत्यादि देवोन्च पोप चारे
तेषां च प्रशमित सतां
श्री मद्भागवत कथा निर्विघ्न पूर्वक समा
प्ति श्री भगवतो वासुदेवस्य द्वादशाक्ष
रमंत्रस्य सपादेक त्रिंशल्लक्ष संख्या
पुंकार पत् बोल वरण करण समये
निर्विघ्नता सर्वत्र
तत्रापार्थम्। तेषां च प्रशमित
श्री मद्भागवत कथा निर्विघ्न पूर्वक समाप्त्यर्थं

सर्वे बांधिल्दणां सजातिप्राप्त्यर्थं श्रीमन्निगमत्रीम
न्त्रस्य सपादलक्षसंख्याख्य जपं कारयतु ब्राह्म
णाद्दिवरण करण समये निविघ्नतां बु
न्न सर्वत्र हर्षानन्द जपफलप्राप्त्यर्थं च श्री
दोगणपत्यादिदेवान्यचोपचारेर्हं पूजयि
ष्ये ॥१॥ जो कोई क्रूर पितर एक होउ स
के निमित्त नारायणबलि करणी चाहिये उ
स एक की नारायणबलि होति है सभ पितरों की
नारायणबलि नही होति है सभ के निमित्त
लोप लगाय मंत्र का जप मात्र वार कर [illegible]
भ कर देणा लिखा है ॥ जो एक पितर को [illegible]
क्रूर है तो उस की नारायणबलि वास्ते उस
का प्रथम दिन प्रतिज्ञा संकल्प इस प्रकार कर
णा ॥ अमुक गोत्रस्य अमुक शर्मणः [illegible]
अमुक गोत्र पुरुषस्य [illegible] दोग मकदास [illegible]
त्वा दिवलोक प्रिये दुर्मरणवाचतु [illegible] दुर्मरणा
नारगत्यलक्षि दुर्मरणजनित पाप [illegible]
के दे लोज [illegible] प्राप्ति कामः सजाति प्राप्ति का [illegible]
श्रीज [illegible] स्य सपादलक्ष संख्याख्य ज
पं कारयत [illegible] वरण करण समये नि
विघ्नता [illegible] न [illegible]

3

आप्तार्थं चक्र आदौ अ[illegible] पत्रागि देवान्यथोपचारे
रतः पूजयित्वा ॥ १ ॥ एवं कृत्वा अहो अस्मद् जयेतु ॥ अहम्
जनेकानासायनप्रगन्ति से बालच्चो दरीहवन्ते पद्धतिधि
द्वारण बालश प्रति बालभ उस पद्धति मे है ॥ पूजना
[illegible] तारन्मु ॥ श्रालराणां बरणां कु० प्रपमं वे दक्षा
स्य वरणं ॥ तद्यथा ॥ अपवित्रेति पठित्वा [illegible] त्रिकुश
जेल. पादाय देश काल संस्मृत्वा ॥ अमक गोत्रो हं ऽ
प्र[illegible] [illegible] हं वैष्णवं चोगृह्णो ह [illegible]पदो दासो हं ॥
[illegible] ए पाः हयरो श्रीमद्भागवत [illegible] श्र
वणार्थं तथा च श्रीमद्भागवत कथा निर्विघ्न द्व
के[illegible]मा त्वयं अमक गोत्रं अमक शर्माणं त्वाल
णं श्रीभागवत आवरणं व्यास त्वेन त्वाम हं
वृणे [illegible] कृतो[illegible]ीति व्यासेनोक्तम् ॥ वृते त्वदी चेति मं
त्र [illegible] नेश्वानम्र ततः तिलकं कृत्वा प्रार्थना कु
र्यात्[illegible] यथा स्वर्गे[illegible] त्रादीनां वृहस्पतिः तथा त्वं मम
[illegible] नाचार्यो भव सुव्रत ॥ इति प्रार्थना ॥ अ
[illegible] प्रबोधक सर्वशास्त्र[illegible] विशारद एतत्कर
प्रकाशेन मुद्रितानं विनाशय ॥ ततः भाग
वत [illegible] प्रार्थना ॥ श्रीमद्भागवताख्य स्त्वं प्रत्य
[illegible] कृष्ण एव हि स्वीकृतोसि मया नाथ मुक्त्य
र्थं भवसागरे मनोरथो मदीयो यं सफलः सर्व
था त्वया निर्विघ्नेनैव कर्तव्यो दासो हैं तव केशव ॥
इति प्रार्थना ॥ [illegible] इस प्रकार प्रार्थना करके फेर
[illegible] गणेशकी जो गणेश हीपो ना [illegible] को

वरण का संकल्प करे ॥ देशकालौ संकीर्त्य अ-
मुकगोत्रोऽहं अमुक शर्माऽहं अस्मिन्संग्रहे प
रोगी मम भगवत कृपा निर्विघ्न पूर्वक स
मापयुं श्रीभगवतो वासुदेवस्य द्वादशा
क्षर मन्त्रस्य सपादैक त्रिंशल्लक्ष
संख्याख्य जपं कारयितुं एभिः वर्णैः
नुसारिका उपर्णा जपस्थ तो जो मुको
व्रतपूजी कलादिभिः ॥ अमुक गोत्रं अमु
अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अहं वरणे ॥
अत नदी चोति रक्षा बंधनं ततः तिलक
कुं० ततः जप संकल्पः पूर्व वत् ...
वादशाक्षर मंत्रस्य सपादैक त्रिंशल्लक्ष
स्वसंख्याख्य जपं ब्राह्मण द्वारा अहं
कारयिष्ये ॥१॥ ओं जापक जप करे ततः
प्रार्थना ॥ जपतु जपतु देवो देवकीनन्द
नोऽयं जपतु जपतु कर्त्ता कल्याणं
प्रदीपः जपतु जपतु मे पः पद्मनाभः को
मलाङ्गो जपतु जपतु पूर्णा भारतां
हरमुकुन्दः ... [illegible]

पत्नी मंत्र जाप करानें ब्राह्मण नौं वर
णम्॥ समस्त पितरों के निमित्त गायत्री
के जप के वरण का संकल्प इस प्रकार
करें॥ अमुक गोत्रोहं अमुक नाम
शर्माहं अप्रोहं वा [illegible] अमुक गोत्राणां
अमुक पितृणां सद्गति प्राप्त्यर्थं मम इह
धन धान्यादि समृद्ध्यर्थं पुत्र पौत्रादि वृ
ध्यर्थं कर्तव्य श्री गायत्री मंत्रस्य
संख्याकं संख्याकं जप कारयितुं॥
रोभिः ब्रासन वृणुम एतु सार्थिकाउ
परीजपस्य तीओरि काचेत पूगीफ
लादिभिः अमुक अमुक गोत्रान् अ
मुक रसंख्याकान् ब्राह्मणान् विभ्
जते व अहं वृणो॥ इस प्रकार करें
जो एक ऊर के निमित्त नारायण बलि
करवाणी हो तो उस के जप मंदि[illegible]त्री
के वरण का संकल्प इस प्रकार क
रें॥ अपवित्रः पवित्रो वा देश कालौ संस्मृ

कामक्रिय ... ॐ कश्यपी ... ग्रहण ...

द्वा॰ अमुकगोत्रो हं अमुकशर्मा। हं शु दोहं वा॥
अथामुकगोत्रस्य अमुकशर्मणः पुत्रस्य वा चतुः
षष्ठी दुर्मरण नरगत अन्तर द्वारीद्य पक्ष
दुर्मरण जनित पाप दोष दूर्वक देहोद्धर
ण प्राप्तिकामः [illegible] कर्तव्य श्री ब्रह्म गायत्री
मंत्रस्य सपाद लक्ष संख्याख्य जपं का। रै
तु एभिः ब्राह्मणैः न कर्णे तु स्मोहं॥
र्णी जपस्य लोडोरिका द्वतः ॐ फलागर्दि
अमुक अमुक गोत्रो अमुक र संख्याक
ब्राह्मणान् विभाजयेत् ... हं ...
वरणं कुर्वा जपसंकल्पं कुर्यात्॥ पूर्व वि सो
कृत्वा अमुक गोत्रो हं अमुक शर्मा हं
शु दो हं वा अमुक गोत्रस्य अमुक शर्म
णः पुत्रस्य वा चतुः षष्ठी दुर्मरणं नर
गत पक्ष दुर्मरण जनित पाप ...
प दूर्वक देहोद्धरण प्राप्तिकामः अमुक कर्तव्य
श्री ब्रह्म गायत्री मंत्रस्य सपाद लक्ष संख्या
ख्यो जपं ... ब्राह्मण द्वारा हं कारयिष्ये॥ जाप
का जप कुर्युः॥ जपान्ते ब्राह्मणं वदेत्॥
ततः प्रार्थना॥ ...



प्रा... पादेभ्यो ... तानि सद्यो

वंदेत मच्युतम् ॥ एवं कृत्वा यजमानस्य
द्वांव ध्नीयात् ॥ ततः यजमान स्वतिलकं कु॰
तदनन्तरं श्रीकृलसायन्ताः कर्तव्या ॥ संसार
सागरे मग्नं दीनं मां करुणानिधे कर्मग्राह
गृहीतानां मामुद्धर भवार्णवात् ॥ ततः शके
स्तापेन ॥ शकरूपप्रबोधस्त सवर्णस्त्र विष्ण
र एतत्कृपा प्रकाशेन मद्दुरानविनाशय ॥
गंगा यमुना सरस्वती गोदावरी नर्मदा कारणम्हं
त्रिवेणि गंगे यमुने वर सरस्वती त्रिवेणीसंगे
खलु विश्व पावनी मंदाकिनी गगनां
तरस्था विभाति वे ती मनसि
तु पिता ॥ श्रीतीर्थ राजेन्द्र महाधि राजं
प्रयागमखिल पवनज सखा हयरो
भगवन्नु त्रिवेणी श्रीमद्याला
लगाधाम् ॥ त्रिवेणी दुर्गगिरिजा शिव
प्रिये माधवश्चके षट् लजा धाम् ॥ इंद्र
देवांश्च कुबेरान् महाश्च गंधर्व विद्या
धर नाग यक्षान् सरित्समुद्रान्न पर्वत
देशान् ॥ तीर्थानि नद्यश्च ह्रदाश्च सर्वान्
मे तु श्रीकृष्ण कपाशत मे त्वयः तु नेमि
गलं मं जतो सदा ॥ एवं सर्वान्तीर्था
दी श्रावण कृत्वा ति

[illegible]

और भी भूपजमान भके ॥ जो ए द्वे भूसवी मर सिध्य

भ्रत भतिप्रसङ्गेन ॥ अवसाम श्रोतिय ते है सम्प्रञोऽस्यानीति सामग्री ॥ पहले वस्त्र वेजा ग से लें ए इस भांत पंडित क प्या वह ए वाले को उ सा बते गो प ह ते ॥

१ पगडी जरी के चिन्हेदार १ नहरी रंगदार

१ धोति जोडा कन्नी दार

१ गरखा

१ कुरता

१ छपदार रेशमी कन्नी का

१ अपना जरी के पल्ले का कांधे का

१ दुशाला

१ आसन गली चा

१ धवि

१ साफा

१ रेशमी वस्त्र पीतरंग का गज ११ का सूद व मञवो न के वासो

१ वसन रेशमी पुस्तक के का पहल का

पगं पंडित के बीच है ॥

अब ब्राल ए के कर ए की धोति न ग पू साफों के वास्ते सपेद मलमल गज १५ इसमें आधु नो दी मरव के वी १२ साफे आ तिये और बर ए के वी आलिये नार पर एवति मे सप न च बि पों का वी आलि सा [illegible] आलिये



[illegible]

रसाग तोनरखोघर नाभजवन्न मद्दो ओंऽद्रोय
नमः॥ओं ए ह्रीं सर्वनिर ह व्यवा ह अनि प्र वी र स्मि

५ प्रासन
५ जोगखी माला
वनातकी
बाखारवेकी
१ गद्दीखारवेकी
२॥ गज चौडी
लंबी दुहरी
रूईदार
१ तकीया
१ चांदणीका
लाल दोर उप
रे टुल पीली
नीचे लाल त
टुल घोटे
दार १॥ गज
लंबी चोडी
४ ऊंडी पारस
रखवर पीती
घोटेदार

१ एक एकवतो
दके ५ टुक
डे टुल के पां
चरंग के
१ सुरख
१ पीला
१ हरित
१ काला
१ सुपेद
१ आधगज
जटुल
सुरख
नालीपर
केवासे
१ नालेडो
रू के
पंसारीकों
सौदा तेना ईसभांत

१६ जने ऊ

6



पुष्प: तेजोवतालोकगणोनसाऊ मे माधुरखा
...नमः॥ ओं ए ह्रीं...

स्वतधमरोजसेवामहरसांपतदव्यमूत

चंदनसपेद

धपाइपक्का

३केशर

३कपूर

२धूपगुग्गलजेधचे

॥कुंकु

हलदी

सिंदूर

कौडी१

चंगासरसो

२आधीछटाक

॥सतावरसर्वौषधी

५मेवाद्धारोमेवे

॥इंद्रयव

॥भोजपत्रे

२आधीछटांकसहत

८०सपारी

६०इलायचीवडी

२इलायचीछोटी

२आधसेरकाजजीवादामखारकेवास्तेपंडितके

॥मीरचेमुरी

नालीयर

॥मलौंगी

॥मिसरीतवीकी

२गुलविनौ कसा



मृत्युंजय... धर्मराजसेवायनगंधाक्षतंपुष्प...

धवंनमस्तु ॐ धर्माय नमः॥ ...

नापके चावशील वताल पेश वस धेः ममा
रुपाहे भुआचिनाथ तो के भूर वे भग व न

सुनार के पास | १ मेजा | १ सीसा
करणे देणी | १ रजाई | १ सुरमेदा
धर्म तिर्ई सभांत | १ वधावरण | नीस
| | १ लाई
२ सोने की | १ टाकरा तास | २ तकीया
१ चांदी की | चांदी का | १ जोडा कपडे का पगडी गरखा धोती दुपटा | १ कंघा
१ तांबे की | २ कछुडी | १ तिवत | १ आसन
१ कांजसी सेकी | | १ जंठी | १ दर्पणा
१ लोहे की | १ चरला | १ माला | १ साफा
६ पवित्रियां | मोति | १ वरतनेवाप |
१ अंगूठी पर | | १ पंखा १ छत्री |
मूर्ति गंठी | | १ जोडा जूतीयों का |
पपाट कि के | | १ जोडा खडाउं का |
२ ली | | १ लाठि १ डुवट पटडे |
पुरोहित को | | पर शय्या देनी |
जो शय्या देनी | | १ सब वस्तु जो देनी |
हो तो शय्या साङ्गो | | सब तीज २ हुर रजाके |
पाङ्गो देनी। | | |

[illegible] सौभाग्यके साधन में गोदान

जो शाव्यांकी सामर्थ्य देणेकी नहीं होतो १
जोडा कपडे का १ तिवल १ छ्ग्री १ जोडा
जुती पोंका ५) वा ३) वा ५) वा ७) वा १०) रु
पये जोके देदेणे अथवा यथा शक्ति दे
देणे इतनी वस्तु पुरोहितको देदेणी

वरतन कसेर से तेने इस भांत नव
१ लोटे इस भांत

१ पंडित का लोटा १ पंडित को थाल दे
णा कांशीका वडा

५ लोटे पंच ब्राह्मणों को देणे के हैं"

१ लोटा पुरोहित को देणा
इस भांत १ लोटा

१ लोटा १ कटोरा जो की
शाथ देणा जो जो न ही
दे तो फेरके कछु काम न होहै

६ह पात्र लेणे चाहिये

१ छ्गपा पात्र की कटोरा

जो शाव्य देतो
५ वा ७ पात्र
देणे
लोटा थाली
डेग चीक
डची कटो
रा वंटा गला
स इस भांत ७

सरोमे: विद्याधरेन्द्र: सूर जीव मोनः कु

सोदा व्क लार का

५ दूहणा सरामी
सुधी त्या वऐ

१ केल श्रा घडा म
टीका ओर जो
सामर्थ होतो ता
वेका व्कलश क
रणा लिखा है
१ केलश्रा वडा
तंबे का

१ पखा ओर
२ व्रासरामी

१ दीपके
बाहडी के पास
१ चोकीवडी १ ग
ज लंबी चोडी

१ तपाई

२ जोड खडाऊ

वे १ पट डा ग्रा
धगज लंबा चो
डा बोड श्रा मात
का

१ बीस ० ९ चोकीका
चौकेश

२ पटडी पांच स
व्क केवास्ते

१ जोगज ही चो
का पंडितका

४ केलेवंदरवा
ल ओंवकी फू
लोंकी

कुशा पते ५ ७ रे
ता १ घडी ना ह न
की मटि बवव ऐ
केवास्ते ओं गपल्लव

दुध धी दधि गंगा
जल जोमल गोम
त्र कचा सूत राग
दूर्वा वेरी के पते लावर्ती

| स्थान | ५ अन्न इसभांत प्रत्येकअवसरपकी |
| --- | --- |
| १ सेरआटाचावलोंकापका | उडद आधसेर |
| | चावल आधसेर |
| १ सेरआटा यवकापका | गेहुं आधसेर |
| | तिल आधसेर |
| इसमिंधअर्के पातालशब्द | पूर्वकलशोंकेअन्न |
| | अवचर वाते |
| १०८ पीपलकी | ल एकाहुतिने |
| | तु भीगाबहुहो |
| १ पतलभोजनआदु केवास्ते पुरीयां मिठाई जोसाम्र्थ होतो १२ ब्राह्मणोंको भोजनके उपरान्त दीक्षणा आदुमे पान्चेरा देनी॥ | ज्य यवका खपा: इसवाक्यकेप्रमाणसार तो २० सेरतिल |
| | १५सेर यव |
| | ५सेर चावल और |



के सब सामान भजन मसो॥ ओंबरसाय

...सहोसतु सचः प्रा ६ सोप्यधः कोलि को वः...
बोन्हे ए क्ष ओं भगवत् नमसे॥ ओं वापवे नमः॥

१० सेर घी पह कच्चा तोल है सवा मण के होम का तोल है पह सपाद जे चके जमसे पह हवन है पसेर का भाग होता है

शकर च पयाक्र चि लिखा है १

और हमारे यहां सहर मे तो चतुर्भागा: ग़ी लाज्जोकाद्विभाग यव एव च एक भागा श्च तंडुला: द्विभा घृत शर्करा॥

६ सिवाय से तोल २० सेर का चौतिल २० सेर यव ५ सेर चावल ८ सेर घी कच्चा ७॥ साढे सात सेर शक्कर कच्चे तोल ६ सातरह के तोल पहा करते है अधिक घृत शक्कर पाते है कुछ जाली पर मे पड जाता है कुछ आहुति नीचे पडजाता है॥ दे रात्रि को जारी कर ए अलग स्थाली पाक के वास्ते २५ सेर को ली पात्रम पचा॥ ...
च वर धड के ले एख के ले सोद ले ...

गोलोकेनसा कुसर्वै पंचभिः पितृभिः सहैव
जो गोलक वासुदेव मंत्रका जपकरे
उसको प्रथम संकल्प इस प्रकार क
रणा जपका ॥ अपवित्रेति पठित्वा देशका
लं स्मृत्वा अमुक गोत्रो हं अमुक शर्मा
हं अमुक गोत्रस्य यजमानस्य अमुक
कामिनः उमुस्य वा मनोकामना सिद्धि
र्थं गायत्रि सपाहत्य यो श्रीमद्भागवत
कथा निर्विघ्न पूर्वक समाप्त्यर्थं तथा
च श्रीमद्भागवत श्रवणादि सिद्ध्यर्थं [illegible] ॥
कर्तव्य श्री द्वादशाक्षर मंत्रस्य सपा
दैक त्रिंशत्सहस्त्र संख्यात्मक जपो
त्तरगत यथा संख्यात्मक जपमहं
करिष्ये ॥ एवं संकल्पं कृत्वा आचमन
कृ० आचम्य प्राणायामं कृत्वा ॥
अंगन्यास करन्यास कु० ॐ ॐ
नमो दक्षिण तर्जन्यां ॥ ॐ नंद दक्षिण
मध्यमायां ॥ ॐ मोद दक्षिणानामिकायां
॥ ॐ भद्र दक्षिण कनिष्ठिकायाम् ॥ ॐ
अं वाम कनिष्ठिकायां ॥ ॐ वं वामानामि
कायां ॥ ॐ ते वाम मध्यमायाम् ॥

ग हाण ह जां भगवत वासुदे ॥ ते कनिष्ठ ...

ॐ वां वामतर्जन्यां॥ ॐ सुं ॐ दें दां दो
णां अंगुष्ठ पर्वणो॥ ॐ व्रां ॐ पं वां मांडुं षु
पर्वणोः इति कर न्यासः॥ अथ हृदया
दि न्यासः॥ ॐ नमो हृदयाय नमः॥ ॐ
नमो भगवते शिरसे स्वाहा॥ ॐ वासुदे
वाय नमः शिखायै वौषट्॥ ॐ नमो नमः
कवचाय हुं॥ ॐ भगवते नमः नेत्रत्र
याय वौषट्॥ ॐ वासुदेवाय नमः अ
स्त्राय फट्॥ इति हृदयादि न्यासः
अथ ध्यानम्॥ किरीट कुण्डल म
हे तिमि केयूर स्पर्श मुक्तालंकृत सर्व
गात्रं रुपीताम्बर कांचन चित्र न
कुंभ मालाधर केशव म पोमि
१ एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं द्वादशा
क्षर मन्त्रमुत्तमं भोक्त्य स्वप्रसा
दा दे अचिरात्सिद्धिं सगपस्पति॥
ॐ एखे विश्वेश्वर नः त्रिशूलिः कपालख
ट्वांगधरेण सापि लोको सम्भूतेश्वर परसिद्धौंग
ताण एव ॐ भगवन्नमस्ते॥ ॐ ईशानाय नमः॥ ॐ
एखे हे पाता शतार्धं धरं

...दानादि पुरसोक ... प्रमाण दो

धर्मसिंधु ग्रंथे प्राशोच प्रकर्णे
तृतीय परिच्छेदे उत्तरार्द्ध पृ० ४३
संक्रांतिपर्व प्ररक्ष्म रागनपे ग्र
विद्धे दैन संक्रांतिपर्व गिरिवरस
सप्ताह भागवत श्रवणादौ च प्रा
रंभे नैर नाशौचम्॥ नांदीश्रा
द्धोत्तरम् नाशौचम्॥ ग्रहण
निमित्तक स्नान दानादौ नाशौच
संक्रांति स्नानादौ नाशौचम्॥॥

अथ भगिनवकाको छौर करावणा॥
फिर नांदीमुख श्राद्ध यजमान से
करावणा पापादेणा १२ ब्राह्मणोंको
भोजन करावणा अथवा १२ पत्तल
देणी अथवा यथाशक्ति भोजनपात्रों
पर अन्नपरिवेषण करदेणा॥
श्राद्ध से पश्चात् मंडप करके के
लाइया ... को नवग्रह ... नके



छुर पसरदी पं॥ ॐ जन ... नमः॥ ॐ ए...

हि विश्वाधिपते प्रीनान्द्रजो कनैसाकु पितृ देवता:

रणा फेर पञ्च ग्रास लोक. व रणा बांध
णा फेर के ले स्थापन कर णे चौंकी को
स्थापन कर णा ४ कलश के दली
सामो के पास र खणे पववा णे चौं
दणी जंडी यां लजा वणी १ चौंरी के वां
सकी पंचा मृत गंगा जल मे स्नान
करा कर क गंधाक्षत से पूजन क
र क चौंकी के [redacted] भाग की तरफ
स्थापन करदे णा उस मे पितर
प्रेत का वास लिखा है ॥ फेर पिंड
दान लजा कर क जिस व खत का
लग्न स्थिर मुहुर्त हो उस वखत
मुहुर्त कर णा १ रुपया १ नाली य
प्रथम दिन यजमान से पड़ सा क पर
चढावनो चंदन तुलसी व चवनी पता
सेपा साद भोग लजा कर क वाड णे
? आरती कर णी कपूर की रात्रि
को चापे आग घृत दीपक वाल कर के
सध्या देव सण जागरण कर णा यहां प्र
थम दिन मृत पतके गृह मे की विधि कर्ते



विश्वा धारन: सतत शिवा पितामह सर्वे भगवन्नम

स० ओ३म् ललित नमो ... सोवाह पत्र

१ प्रातः दीन से प्रथम स्कंध से तृती
य स्कंध के अध्याय २१ पर्यंत ५०
अध्याय का १२ बजे तक पाठ करणा
फेर २ घडि दुग्ध भोजन लगा के आ
राम करणा फेर ४ बजे पर अर्थ
करणे का प्रारंभ करणा ८ बजे त
क अर्थ करणा इस प्रकार नित्य
की नित्य ७ दिन तक ५० अध्याय का
पाठ करणा सो जकी रोज ६ दिन में ३००
अध्याय हो जाते है॥ ३५ अध्याय ७ वें दि
न रह जाते है उन का पाठ ११ बजे तक
कर देणा फेर २ अध्यायो का संपूर्ण करी
कार देणी फेर ८ वें दिन जीता के
१८ अध्याय को पाठ कर देणा और
सहस्त्र नाम का पाठ करणा हवन गा
यत्री के वा इष्ट देव के मंत्र का दशांश क
रणा जो कोई एक पितर करे हो उ
स के निमित्त नारायण बलि कर देनी

सम्पाजादान २

फेर हवन नारायण बलि आदि सें मुक्त
पिकरके फेर ब्राह्मण भोजन १२ को
तो जरूर ही चाहिये प्रगाडि पश्चा
त्तिः प्रतान [illegible] नारायणबलि एककी
तेति है वरु तो कोन हीं
८ लन्दा सहस्त्र को आयु है [illegible] बाप
रको
कलियुग का आयु है
४ लन्दा ३२ सहस्त्र
जो नारायणबलि नहीं करे तो गायत्री के मंत्र
का और वासुदेव के मंत्र का दशांश हवन
करादेणा ॥ जो कोई एक पितर प्रेत हूए है
उसके निमित्त नारायणबलि करा
देणी चाहिये औरों के निमित्त गायत्री
मंत्र [illegible] जपले ॥
उसका दशांश हवन तर्पण मार्जन मा
त्र करदेणा चाहिये ॥ वासुदेव मंत्रो के द्वा
दशाक्षर के विधि श्री मद्भागवत कथा नि
र्विघ्न पूर्व क समाप्ति हो ऐके वास्ते जपणा
चाहिये जितना मंत्र जपा जावे उतने का ही
दशांश हवन करणा चाहिये अलमुन
एक ब्राह्मण का वरणा गायत्री के मंत्र का कर
णे नारायणबलि जो करणी हो तो एक के रूप पित
र प्रेत के निमित्त और ३ ब्राह्मण और पितरों के

जन्माद्यस्येत्ति॰ तं सत्यं परं धीमहि सशिष्या वयं ध्यायेम॥
ध्यायतेर्लिङि आदसः॥ बहुवचनं चात्र शिष्याऽभि-
प्रायम्॥ तं कं यतः यस्मात् ईश्वरात् अस्य विश्वस्य
चिदचिन्मिश्ररूपव्यवस्थितसुखदुःखोपभोगस्य
जगतः जन्मादि भवतीति जन्मस्थितिलयादिः भ
ङ्गाभवन्ति॥ कथंभूतात् यतः अन्वयात् चेत
नः इतरतः॥ पुनः तं कं यः अर्थेष्वभिज्ञः अ
भिज्ञः अभितो जानातीति अभिज्ञः॥ पुनः तं
कं यः स्वराट् स्वयं राजते इति स्वराट्॥ पुनः तं कं यः आ
दिकवये ब्रह्म तेने॥ केन हृदा॥ किं तत् ब्रह्म॥ यद्यस्मिन्
[illegible] सूरयः मुह्यन्ति॥ पुनः तं कं यत्र यस्मिन् त्रि
ति त्रिसर्गो मृषा॥ किं यथा तेजोवारिमृदां
विनिमयो यथा॥ कथंभूतं तं स्वेन धाम्ना
सदा निरस्तकुहकं तं सत्यं परं धीमहि
ध्यायेम॥ इति श्लोकार्थः॥ तमेव स्वरूपत-
टस्थलक्षणाभ्यामुपलक्षयति॥ तत्र स्वरूपल
क्षणं॥ सत्यमिति॥ स एव हेतुः यत्र यस्मिन् त्र
याणां मायागुणानां तमोरजःसत्त्वानां सर्गो
भूतेन्द्रियदेवतारूपः अमृषा सत्यः यत्सत्यतः
मिथ्या सर्गोपि सत्यवत्प्रतीयते तं सत्यं परम्
इत्यर्थः॥ अत्र दृष्टान्तः॥ तेजोवारिमृदां
यथा विनिमयो व्यत्ययः॥ अन्यस्मिन्न्यावभास

सर्वथाऽधिष्ठानसत्तया सत्तद्व प्रतीयते॥
इत्यर्थः॥ तत्र तेजसि वारिबुद्धिः मरीचितो-
ये प्रसिद्धा॥ भ्रदिकाचादौ वारिबुद्धिः इत्यादि॥ प-
क्षा पक्षान्तरम्॥ यद्वा तस्यैव परमार्थसत्यत्व
प्रतिपादनाय तदितरस्य मिथ्यात्वमाह
यत्र मृषैवायं त्रिसर्गो न वस्तुतः॥ सन्नि-
ति॥ अत्रेत्यनेन प्रतीतं उपाधिसंबंधं॥
वारयति॥ स्वेनैव धाम्ना सदा निरस्तकु-
हकं कपटं यस्मिन् तं सत्यं ध्यायेम॥
इति च स्वरूपलक्षणम्॥ अथेदानीं तट-
स्थलक्षणमाह॥ जन्माद्यस्येति॥
अस्य विश्वस्य जन्मस्थितिलयादि य-
तो भवन्ति तं धीमहीति॥ तत्र हे-
तुः॥ अन्वयादितरतश्च तस्माद्वै प्रकाशे ब्र-
परमेश्वरस्य सद्रूपेण च घटादिकार्येष्व-
न्वयः खपुष्पादिभ्यः व्यतिरेकात्॥ य-
द्वा अन्वयपदार्थेनानुवृत्तिः॥ इतरतश्चे-
न व्यावृत्तिः॥ अनुवर्तते वा सद्रूपे प्रति-
कारणं॥ मृत्सुवर्णादिवत्॥ व्यावर्त-
ते चाविश्वकार्येषु घटकुण्डलादिव

दित्यर्थः ॥ यद्वासौ विपर्यव्यादन्वयव्यतिरेका
भ्यां यद्यस्य जन्माद्यं तद्यतो भवतीति सं
बंधः ॥ तं ध्येयं ध्यायेमेति संबंधः ॥ तथा
च श्रुतिः ॥ यतो वा इमानि भूतानि जाय
न्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविश
न्ति इत्याद्याः ॥ स्मृतिश्च ॥ यतः सर्वाणि भू
तानि भवन्त्यादियुगागमे यस्मिंश्च प्रल
यं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ इत्याद्याः ॥
तर्हि किं प्रधानं जगत्कारणत्वात् ध्येयं
ऽभिप्रेतं नेत्याह ॥ ऽभिध्यो यः ऽभिप्रेतः
सर्वसाक्षितया जानातीति सः ऽभिध्यः ॥
स ऐक्षत इमान् लोकान् प्रसृजा इति
श्रुतेः ॥ अहं इमान् लोकान् प्रसृजे
इति स ब्रह्मणे चोक्त ॥ स इमा
~~लोकि श्रुतेश्च~~
न् लोकान् असृजत इति श्रुतेः इति द्वि
तीयश्रुतिः ॥ ईक्षतेर्नाशब्दम् ॥ त्रिपदात्म
कमिदं सूत्रम् ॥ अशब्दं प्रधानं जगत्कार
णं न भवति कस्मात् ईक्षतेः ईक्षतेः कोऽर्थः ईक्ष
णं कर्तृत्वं ... ब्रह्मणः ... ॥ इ

मान् लोकान् सृजते ॥ अतः ब्रह्मैव जगत्का
रणं भवति ॥ स ऐक्षत बहु स्यां प्रजायेय ॥
चेतनस्यैव जगत्कारणस्य विवक्षितत्वात् ॥
तर्हि जीवः स्यात् ॥ नेत्याह ॥ स्वराट् स्वेनैव
राजते इति स्वराट् ॥ तं स्वतः सिद्धज्ञानमित्य
र्थः ॥ तर्हि किं ब्रह्म ॥ हिरण्यगर्भः समवर्तता
ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् इति श्रु
तेः ॥ नेत्याह ॥ तेने तनु विस्तारे प्रस्पधातोः
प्रयोगः ॥ यः आदिकवये ब्रह्मणे ब्रह्म वेद
ते तेने प्रकाशितवान् ॥ श्रुतिरप्याह ॥ यो
ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्र
हिणोति तस्मै तं ह देवमात्मबुद्धिप्रका
शं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥ इति
श्रुतेः ॥ ननु ब्रह्मणोऽन्यतो वेदाध्ययनम
प्रसिद्धम् ॥ सत्यं ॥ तत् हृदा मनसैव
तेने ॥ अनेन बुद्धिवृत्तिप्रवर्तकत्वे
न गायत्र्यर्थो दर्शितः ॥ प्रचोदिता येन
पुरा सरस्वती वितन्वताऽजस्य सतीं ॥ स्मृ
तिं हृदि स्वलक्षणा प्रादुरभूत् किलास्य

स्यतः समेकं षितं॥ सत्व भः प्रसोऽभेदतामु
॥ नन्वेवं त्वा स्वरूपमेव सुप्रतिबद्धः न्या
ये नैव प्रमुपत्तमतामु ॥ नैयाह॥
यद्यस्मिन् प्रति गणे स्वरूपोऽपि मेद
नि तस्माद् लक्षणोऽपि साधीन सोऽनव
त्॥ अतः स्वतः सिद्धसोऽनु परमेश्व
रस्यैव स्यात्॥ अतः प्रतीवनं कारं सं
॥ अतः एव सत्यः॥ अ स्वतः सत्ता प्रदत्वा
च्च ॥ परमार्थ सत्यः॥ सर्वं सोऽवेनचति
रस्तकुटककापट पुतं धीमनो॥ अ
पच्याद्धारं भेण च ॥ पद्यार्थ प्रति विद्या
र॥ भेदः स्फुरणमिति दर्शितम्॥ पक्वो
कमस्यपुरुषे पुराणदानप्रसावे॥ यत्रा
ध्येकृत्य ॥ पत्रोऽवर्पिते धर्मविसार
वता: सर वधोपेतं तन्त्रागवत्मिष्यते
तैर्विवत्त तन्त्रयोदधा जे मसोहस ॥॥ग्रं २५
मन्वितम्॥ प्रोष्ठपद्यापौर्णमास्याम्॥
सपातीवैष्णवं ... समस्यते

स्त्राणि पुराणं तत्संकीर्तितमुः ॥ पुराणान्तरे च ॥ ग्रंथो ऽष्टादशसाहस्रो द्वादशस्कंधसम्मितः ॥ हयग्रीवब्रह्मविद्या यत्र वृत्रवधस्तथा ॥ गायत्र्या च समारंभस्तद्वै भागवतं विदुः ॥ ३ ॥ पद्मपुराणे ॥ अम्बरीषं प्रति गौतमवचनम् ॥ अम्बरीष शुकप्रोक्तम् ॥ नित्यं भागवतं शृणु पठस्व स्वमुखेन नित्यपदीपस्य भवबंधापहम् ॥ मतएव ॥ भागवतनामान्यदपि न शंकनीयमिति

पुनः स्कन्धोपदेशः ॥ जन्माद्यस्येति ॥ ०॥ अस्य विविधविचित्रभोक्तृभोग्यपूर्णस्य विश्वस्य जन्म यतः यस्मात् ईश्वरात् जन्मादि सकलमिति ॥ यतः इति हेतौ पंचमी ॥ यत्सर्वेकारणं सर्वे यत्सर्वेकार्यं सर्वे उत्पन्नयः ॥ यन्नाव कारणभावे कार्यभाव व्यतिरेकः ॥ अतिरप्याह ॥ अजा मेकां लोहितशुक्लकृष्णां प्रकृति शब्दवाच्यां बह्वीः प्रजाः जनयन्तीं स्वरूपां अजो ह्येको जुषमाणो ऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः ॥

[illegible]

तदुक्तं गीतायां ॥ मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते
सचराचरम् ॥ कार्य्यकारणं प्रकृतिरुच्य
ते ॥ ईक्षतेर्नाशब्दं ॥ इति सूत्रम् ॥ शब्दैकसम
धिगम्यं न भवतीति अशब्दम् ॥ ईक्षतिक्रिया
त्वर्थे ईक्षणं ॥ तस्मात् शब्दप्रमाणम् ॥ यस्य न
भवति तत् अशब्दपदोक्तम् ॥ अव्यक्तं शब्दाऽ
विधेयं प्रानं मानिकं प्रधानम् जगत्कारणं
न भवति अपितु सर्वज्ञः सर्वशक्तिमत् चाऽपि
विशिष्टम् ॥ निरवधिकाऽतिशयानन्दैक
पं निखिलाविद्यापरिहृतम् ब्रह्मैव ज
गत्कारणत्वाक्रांतम् ॥ कस्मात् ईक्षणक
र्तृत्वस्मरणात् ॥ सृष्टिरचने चेतनस्यैव
ईक्षणकर्तृत्वं स्वरूपधर्मस्य परमात्मन्ये
व सत्वात् ॥ जडे प्रधाने ईक्षणकर्तृत्वा
ऽयोगात् ॥ यस्मात् जडरूप प्रधानस्य ई
क्षणकर्तृत्वं न संजायते इति तस्मात् ॥
तद्रूप जगत्कारणत्वम् अपि न संभवतीति
सूत्रार्थः ॥ अतःमति प्रसङ्गेन अलम् ॥

निगमेति॰ हे रसिकाः रसज्ञाः भावुकाः च
तुराः भुके मुखात् [illegible] निग
मकल्पतरो [illegible] अविगलितं पतितं
[illegible] भागवतं नाम फलं कपम् तं फ
लं अमृतद्रवसंयुतम् भनः कर्येम
तेर समालयर संस्पर्शात् लपस्यानं थे
ध्यातं पपप्थिते धूपं मुहुर्मुहु वारं वारं
पिवत ॥ २ ॥ होएकाम्रे ॥ रूपपिवत ॥ भाषा
र्थ ॥ हे रसिकाः हे रसिक भाववाले घर
सो मुख देवजीके मुखमें से [illegible]
पृथ्वीपर पड़ा हुवा निगमा वेदः
निगम नाम वेदरूप कल्पवृक्ष चोका
फलरूप भागवतनाम फल को अमृ
त रससे भरहुये वार रस के आलय
स्थान वो रसरूपी कोहुये वार वार पिव
त ॥ पान करो २ ॥ धर्मः प्रोज्झित के तवोऽ
त्रेति॰ ॥ प्रथं॰ ॥ श्रीमन्नारायणको ने
मीणं किये हुये इस श्रीमद्भागवतप
राणमें मत्सरतारहित सत्पुरुषोंका
कैतवः योनिष्फलाऽभिसंधानेरहितं

उत्तम धर्म निरूपण समाप्त ॥०॥
इस शरण स्त्रोत्र मे वैराग्य भक्त वैराग्य धारने
परवस्तु बोध यानि जानने योग्य
पदार्थ है इसके श्रवण करने से
जितने जल्दी भगवान् हृदय मे
प्राप्त हो जाते है क्या दूसरे शास्त्रो से
भगवान् इतने शीघ्र हृदय मे प्राप्त
हो सकते है कदापि नही शीघ्र भगवत्
प्राप्ति होनि है तो श्रीमद्भागवत के
श्रवण से ही हो सकती है परन्तु श्र
वण करने की इच्छा बिना प्रारब्ध के न
ही होति अर्थात् ~~[illegible]~~ जो प्रारब्ध परस्थि
त है वो हि इसको श्रवण कर सके है और
र नही करते है ॥ प्र. लो. मे [illegible]
पंचमश्लो ॥ ०
प्रथ ~~[illegible]~~ इसका प्रवति
रखते है ॥ श्री शुकदेवजी जन्म लेते ही
संन्यास धारण करके सर्व कर्म को
त्याग कर [illegible] होकर जाने

तं गेतवचे देवाराजीगविरहसे व्याकुल होकर हे पुत्र हे पुत्र ऐसे पुकार तेपु कारतेपिछे चेले उससमयजिन्होने सर्वप्राणीमय होनेसे वृक्षरूप हो करपिछे प्रत्युत्तर दिया उनसर्व प्राणीमात्र के हृदयमे व्यापकरह नेवाले मुनिश्री शुकदेवजीकोमे प्रणाम करताहुं॥ प्रलम्भ। श्रीमद्भा. १ प्र. २ श्लो. २० के का प्रथं यह है॥ कालव्यालेति॰ कालरूप व्याल यानि सर्प के भक्षण त्रास यानि डसने का डर मिटाने के लिये भक्तमनि के हेतु ये श्रीमद्भागवत शास्त्र के ति वाय दूसरा कोई भी शास्त्र के पृथ्वी के विषे नही है। प्रलम्भ। प्रवचनारा पराणे ने में इच्छा ये सश्लोक का प्रथं लिखते है। ततो व्यास: यह कहता है यहां॥ ततो व्यास: ज्ञपसं शो प्र. वे श्रोधान्ते

ज्ञाकं ग्रंथं उदीरयेत् पठेत् इत्यर्थः॥ किं कृत्वा
नारायणं॥ नरं च॥ नरोत्तमं॥ देवीं सरस्वतीं
च नमस्कृत्य॥ नरः॥ प्रत्नाद्यविद्यावृत्तः
जीवेन स्वकर्मद्वारा सृष्टं नारं स्थूलशरी
रं तदेव प्रपन्न प्रवेशस्थानं यस्य स
नारायणः तं नारायणं॥ जीवान्नियम
तृ मन्तः प्रविष्टं शास्तारं॥ तथा च श्रु
तिः॥ अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनाना
मिति॥ तथा नरं जीवमूर्त्तिं रूपग
र्भितं उत्तमं गृहं रूपगर्भोद्धृत्य च श्रे
तरोत्तरं स्यामि॥ तं दुष्कृतं तं मत्र
भक्तं चिदात्मानं तमिति॥ एवं एवं
मवपंन नमस्कृत्यैव भारं॥ वेदव्यासः
समन्वयार्थः॥ एतेषां नरनाराय
ण नरोत्तमानं तत्त्वं प्रद्योतनीं सर
स्वतीं च नमस्कृत्यैव ततो व्यासः त
या एव सरस्वत्या लोकानुग्रहार्थं प्रा
विष्टा जयति प्रविद्या मनन्ते तेजयस
ज्ञं प्रविद्याख्यां नामक ग्रंथं उदीर
येत् पठेत् इत्यर्थः॥ द्वैपायनो व्यासः

दीपरूपं समर्पणं प्रवेशस्थानं यस्य सः वै
पापनः ॥ यद्वा दीपो गजस्तस्य दमसाधो
रणं शुण्डादण्डादित्तदारणं तदेव समर्पणं
स्थापकमुपस्य तं वै पापनं गजाननम् ॥
यद्वा दीपो व्याघ्रः तस्य दं चर्मः वै पं तदेव समर्प
णं यस्येति ॥ यद्वा दीपं ब्रह्म स्वरूपं समर्पणं चि
त्समकाशात्मस्वरूपं यस्य सः वै पापनः स्व
र्भः ॥ यद्वा दीपं गजचर्मोदनं स्थापकमु
पस्य सः वै पापनः तं वै पापनम् ॥ गजाचं
[illegible] स्मरेत् ब्रह्मरूपम् ॥ यद्वा समर्पार्हित
त्वात् दीपं समर्पणं स्थानं यस्य सः वै पाप
नः [illegible] वै पापनो विघ्नः श्वेतदीपपाति वि[illegible]
[illegible]तः ॥ समर्पणं प्रसादनं ॥

---

मनुष्य को दीपवत् नहीं करना । [illegible] न हो [illegible]
[illegible] दीपक बीना [illegible] को दीपक करके [illegible] लिया है
[illegible] को [illegible] के बीना दीपक [illegible] ने [illegible]
[illegible] लिया है [illegible] संस्कृता केवल [illegible]
में लिया है [illegible] भी लिया है ॥ [illegible]
दीपो [illegible] को [illegible] देखिये [illegible]
[illegible] देखने से [illegible] ॥

श्लो० २०

भा० स्कंध प्रथम अध्याय प्रथम ॥ नाय राजा
प्रश्नः साधो कलावस्मिन्युगे जनाः मंदाः सुमं
द मतयोः मंदभाग्या ह्युपद्रुताः ॥१॥ श्लो० २३ सत्वं
रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तैर्युक्तः परः पु
रुषः एक इहास्य धत्ते स्थित्यादये हरिविरंचि
हरेति संज्ञा श्रेयांसि तत्र खलु सत्वत
नोर्नृणां स्युः ॥ जगृहे पौरुषं रूपं
भगवान्महदादिभिः सम्भूतं षोडशक
कलमादौ लोकसिसृक्षया ॥ ततः
कलौ सम्प्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषां बु
द्धो नाम्नाऽजिनसुतः कीकटेषु भवि
ष्यति ॥ अथासौ युगसंध्यायां दस्युप्रा
येषु राजसु जनिता विष्णुयशसो नाम्ना
कल्किर्जगत्पतिः ॥ अवतारा ह्यसंख्ये
याः हरेः सत्वनिधेर्द्विजाः ॥ पार्थिवाद्दा
रुणो धूमस्तस्मादग्निस्त्रयीमयः तमस
स्तु रजस्तस्मात्सत्वं यद्ब्रह्मदर्शनम् २४
भेजिरे मुनयोऽथाग्रे २५ भगवन्तं मुमुक्षवो घोर
रूपान्हित्वा भूतपतीनथ नारायणकलाः
शान्ता भजन्ति ह्यनसूयवः
२६ रजस्तमः प्रकृतयः समशीला भज

भा॰ स्कं॰ प्रथम अ॰ ३ एतद्रूपं भगवतो ह्यरूपस्य चिदात्मनः
मायागुणैर्विरचितम् महदादिभिरात्मनि ॥ श्लो॰ ३० का है ॥

नि वै पितृ भूत प्रजेशादीन् प्रियेश्च
धृ प्रजेपसवः ॥ २७ ॥ भा॰ स्कं॰ प्रथम अ॰ ५
नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते
ज्ञानमलं निरंजनं ॥ इस श्लोक से ज्ञान
योग कर्म योग भगवद्भक्ति के बीना नहीं
शोभा को प्राप्त होता है ॥ इस वास्ते भक्ति
जोग सोई प्रथम मे रखा है ॥ भा॰ स्कं॰ १ अ॰
१ श्लो॰ ५१ वपनं द्रविणादानं स्थानान्निर्यापणं
तथा एष हि ब्रह्मबंधूनां वधो नान्योस्ति
दैहिकः ॥ १ ॥ यही ब्राह्मण के वास्ते
दैड देणा लिखा है और वध करणा
नही लिखा है ॥ भा॰ स्कं॰ प्रथम अ॰ १९
श्लो॰ ३३ पं न्यः पतिं प्रोष्य गृहानुपाग
तं [illegible] शरीर संस्कार समाजो लव
दर्शनं भूषणस्पर्शनं [illegible] पानं यजेन्मो
बिभर्ति का ॥ १ ॥ भा॰ स्कं॰ २ अ॰ १० श्लो॰
[illegible] पां चाला [illegible] ने
३५ कुरु ओगल पां चाला वत्तिकुरु
संर सेना मूर सयाम ना नु प्र त्ता व तं
दो चे मत्स्यान्सारस्वतानथ ॥ १ ॥ श्लो॰
३६ स्तेना [illegible] नक प्रीः सविष्को
गाते सदाना प्रर्प आविच्य ८८ प्रपं



१९ [illegible]
= [illegible]

उदकं गतः॥ मज्जाना एव प्रीतः रु
दति प्राप: सापं प्राविशतीति श्रुतेः
॥ भा० स्क० प्रथम प्र० १३ अपि च स्व वाक्य
विदुर प्रति पुनर्वाद धाः भागवता जोय
भूता स्वयं वि भोति थी कृ वार्ताती र्थानि
स्वान्तस्थेन गदाभृता॥ तरन्ति जलम
तत्तीर्थम्॥ श्लो० १० लोक मुख्य
प्राप्ति॥ येषां संस्मरणात् पुंसां सद्यः शु
ध्यन्ति वै गृहाः किं पुनर्दर्शन स्पर्श पाद
शौचासनादिभिः॥ पादशौच पादाभिषे

भा० स्क० १ प्र० १९ श्लो० ३३ नवप
जानिय तः स्पः पर म प्रथम
जीजानी जो वाक्य भेद वि
ता के विधि क
उ रा लान ... नारम्भ
स्व भाव म पर प्र १ प्रथ०
पर प्रथम ... सः लोक वीजा
नि ... र ला नि ...
... लोकै ... निव

[illegible]

दतीवाक्यमेदेनीनामविधवाक्यैर्वि
भाषिता:१८ लोकएकाकारएवादिनांमध्ये
केचित्तु प्राहु:आत्मानंएवं लोकशास्त्रा
स्त्र संयमंप्राहु: अन्येतु देवमनुष्याद
भिन्नं देवतं प्रभुंप्राहु: ॥परमे
श्वरं साक्षात् कर्मफलं न हि [illegible] तं प्रभुंप्रा
हु: इतरेतु स्वभावमेवकं [illegible] त: पर
एवम्: स्वभावं प्रभुं ईश्वरं मन्यन्ते ॥प
रेतु प्रभुं ईश्वरं केवलं परमात्म
[illegible] न प्रभुं प्राहु: ॥१९॥

भो० [illegible] ०२ श्लो०१८ सर्वं रजसा
[illegible]
[illegible] स्वरूपः स्थिति सर्गे
[illegible] ही ता माया विभो १०
[illegible]
[illegible] अवतार [illegible] होता है [illegible]
[illegible] जाता है प्रलय ॥ श्री ॥
[illegible] निज [illegible]
[illegible]

... श्लो॰ १२ का ...
को घंटे मे भ्रमि चलती है ॥ प्रमाण ... ॥ स॰ ११
भा॰ स्कं॰ ३ अध्याय ११ श्लो॰ १ परमाणु का प्रमा
ण ॥ चरमः सद्विशेषाणामिति॰ ॥ त्रसरेणु का प्रमाण
॥ कला काष्ठा का प्रमाण ॥ मुहूर्त ॥ प्रहर ॥ का
लघटि का प्रमाण ॥ अयन पक्ष मासादि वा रात्रि
प्रमाण ॥ पक्ष प्रमाण ॥ मास अयन सम्वत्सर
प्रमाण ॥ ग्रह सम्पूर्ण प्रमाण ए तीय स्कंध
में लिखे हैं ॥ आयु का प्रमाण ॥ सम्वत्सरम्
त्तं च एणं परमायुर्निरूपितम् ॥ भा॰ स्कं॰ ५ श्लो
क १३ का ॥ ग्रह ... वक्र ... परमाण्वादि मा
जगत् सञ्चलनावसाने न पर्येत्यडे ...
श्च विभः ॥ १ ॥ टीका ॥ स्व॰ पि॰ परमाणोर्वा दिना
सञ्चलनावसाने न भुवनकोश पर्यटति
॥ १३ ॥ इसका स्वरूप का चलना सिद्ध ...
श्लोक १५ पृष्ठ ... प्रशक्ति भरभो ...
स्वच्छत्या पुंसा ... भमाय द्विधावति ...
मेद ... कालात्मा ... मय ... निवर्तते
म् तस्मै वतिहरत वस्त्र स्वरूप ... पृ
टीका ॥ यः कालात्मा स्वरूपः परमेश्वर ...
व तपेभ्रन्तरि दे धावति तस्मै ...
र पञ्चक प्रवर्तकाय है ... पुंसा
स्त ॥ १५ ॥ इन श्लोकों मे स्वरूप को चलता
ना सिद्ध ... काल का प्रमाण ...
...

भगवद्व्रिकामलाक्तास्ता ।
तद्दवः प्रसादपाभ्यद्य ६ । पाद्मकल्पसेवीयह लेनाव्यकल्पभाई

राद्रुतौ होतुका प्रवद्धिपरा द्धहै द्वितीयपरा
द्धहै प्रभाका ॥ और प्रवश्वेतजाराह कल्प
पाद्मकल्प३ स्सेपह लेपा ॥ और वैवस्वत
मन्वका २८ वां युग है ॥ एक सप्तति युगान्तर
गत ॥ ७१ युग के मन्वन्तर गत मे प्रव २८ वां युग
वर्तमान हो रहा है जब ७१ युग समाप्त हो जा
येंगे तब ब्रह्मा का द्वितीयपरार्द्ध व्यतीत हो
गा प्रसुराज प्रलय ॥ भागवत स्कंध ३ अ० १६ ॥
लोकाः सब्रह्मसैव परं गमिते त्रोत्या मकृतं मन्ये
मन्वेव प्रभिरस्सत्कृता ॥ श्लो० ५ यत्सेव
कोचरण पद्म पवित्र गए एसघः द्योताखि
ल मल्लकाति लब्धशीलम् न श्रीर्विर
क्तमपिभाविजहाति यस्या प्रेक्षालवार्थ
इतरे नियमान् वहन्ति ॥ ५ ॥ श्लो० १६
येन्ना [illegible] पिधिपाद्योपतोऽर्थयंत
मुष्य [illegible] स्मित सुधोद्योतपद्म व के
कारूपान्ने रोगकेल याऽऽ मजा व द० ॥
ते तेजोधसैस्य [illegible] मि कृष्णपर है तस्से
११ ॥ यह वीभन्नव [illegible] है ब्रह्मा के मंत्री ॥ भा० स्कं
३ अ० प्रध्याय १२ श्लो० २८ वां वंश्ति रत्वीसच पंच
ते [illegible] ति भगवः प्रकामा चवक मेघातः सकाम

चुत, वरि ष मगिये हो जे भोगाल ए स्व भरवे

इति नः श्रुतम् ॥१॥ तम धर्म कृतम नतीवि
लोक्य पितरं सुता: मरीचि प्रख्या मुनयो ॥
विश्वाभात् प्रत्यबोधयन् ॥ भा: स्क० ३ श्लो
क ३६ अध्याय १२ वां ॥ इतिहास पुराणानि ॥
नि पंचमं वेदमीश्वरः सर्वेभ्य एव वक्त्रे
भ्यः ससृजे सर्व दर्शनः ॥ भा० स्कं० ३ अ०
२६ श्लो० १२ मे तत्वों की संख्या लिखि है तथ
२४ की संख्या लिखि है ॥ और स्कं० ७ मे
अ० ७ मे श्लो० २२ पर भी २४ तत्वों की सं ॥
ख्या लिखि है तथ २४ प्रकृति लिखी है ॥ अ
ष्टौ प्रकृतयः ॥ एकादश [illegible] पंच
महाभूतानि यह संख्या लिखि है ॥

और [illegible] च २ अ० ३१ श्लो० ४३ मे लिंग
देह का तत्व दाग लिखा है ॥ स्थूल देह
का तत्व दाग लिखा है ॥

भागवत के स्कंध [illegible] के श्लो
क [illegible] पक्षेर य [illegible] व च तप ॥
स्कंध के श्लोकों की संख्या को लि

भा० स्कं० ४ अध्याय २ [illegible]
भवव्रतधरा ये च ये च तान्नु समनुव्रताः ।।
पाखण्डिनस्ते भवन्तु सच्छास्त्रपरिपंथि-
नः ।। नष्टशौचा मूढधियो जटाभस्मास्थि-
धारिणः विशन्तु शिवदीक्षायां यत्र दै-
वं सुरासवम्‌ २ ।। [illegible]
[illegible] पतित नास्तिका [illegible]
[illegible]
भा० स्कं० ४ अ० ७ श्लो० ५२ भगवद्वाक्यम्‌ ।।
तस्मिन् ब्रह्मण्यद्वितीये केवले परमात्मनि
ब्रह्मरुद्रौ च भूतानि भेदेनाज्ञोनुपश्यति ।। त्र-
याणामेकभावानां यो न पश्यति वै भि-
दां सर्वभूतात्मनां ब्रह्मन्‌ स शान्तिमधिग-
च्छति ।। भा० स्कं० ४ अ० २२ श्लो० ४० प्रथु
[illegible] तत्वकोविदैः [illegible]
[illegible] न वेत पाचेतन [illegible]
[illegible] पारमहंस्यपर्यगः ।। [illegible] यह स-
नत्कुमार जी का वाक्य है [illegible] पृथु महाराज [illegible]
[illegible] है ।। भगवान [illegible]
की स्तुति [illegible]
[illegible]
ति ४० ।। पृथुवाक्यम्‌ स्कं० ४ अ० २२ श्लो० ३९

त्रैलाप देवः पुरुषः पुरातनो नित्यं हरि पंच
र णाऽमि वन्दना त्कमवाप्नुतद्धी मेनपापिनी
म् यशो जगत्पवित्रम् चवमहे चेमाग्रणी ॥
श्लो० ३८ पत्से वपा ऽश्रोषण्ज हाशयः स्वशरि
वि प्राप्रिय स्तुष्प तिकाम मोच्च र तपदेवं
तद्रु परै विनीतैः सर्वात्मना श्रेयसे कुर्त
निषेव्यताम् ॥ श्लो० ३९ प्रमानुत्तमोत्त
मति वेला मास मेः प्रसादते ऽ धनं
धामं स्वतः स्वयम् यान्निव्यराम्नं धूनि मे
वधात ततः परं किं म नाम्ति भरस्व वेर्भ
जाम् ॥ श्लो० ४० अस्मात्पमनतो स्व तव
को विदते ॥ पहला कारण कुत्तको
पुराज्ञ करते हुये अभमर
४ चतुर्थ स्कंध समाप्त होगया प्रव
पंचम स्कंध का प्रारंभ होता है ॥ स्कं० पं
अ० ५ श्लोक २२ भगवद्वाक्यम् ॥ देवाऽ
सुरेभ्यो मघवत्प्रधाना देवा यथेव
मनुष्यास्तत पशुभवः परः सापि वि
दं च वीर्य्यः समस्तपरो हि देवदेव
देवः ॥ १ ॥ न ब्राह्मणो मे सदृशो ऽस्त

अन्यत् पश्यामि विप्राः किमतः परं नु यस्मिन्न्
दृष्टेः प्रकृतगात्रं न यात् मच्छायाभिवृतमेनं तथाऽ
भिहोत्रे २३॥ एतत्तत्त्रस्य तीर्थं मेघरागपि ने
हुरसंचं परमं पवित्रं शमो दमः सत्यमनुग्रह
श्च तपस्तितिक्षाऽनुभवश्च यत्र ॥२४॥ टीका॥
स्थावरजंगमप्राणिमध्ये वा देवः श्रेष्ठाः २१ ते
ष्वपि देवाः श्रेष्ठा वेदज्ञाः तेषां मध्ये शिवः॥ शिवा
द्विष्णुः तस्माद् ब्रह्मा॥ ब्रह्मणो ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः॥
चौल्वगुणस्तुत्यं अन्येन पश्य परमं रवेहितम् यथा
मे भोगात् तथा अग्निहोत्रेण अश्नामि २३।२३॥
येन वा भिषेन ३ लोकवेदाख्या मेघ तीर्थ
तपश्चिन्सत्यदया अष्टौ गुणास्सन्ति २४
भा० स्कं० ५ अ० ५ श्लो० १० पश्यकिं तानेवा
तमपावकापि कोयवेकवुट्वा नो राजाऽहं
स्वयं मो पश्योधुकलोवधर्मउत्कृष्ण पाऽ
भवितव्ये न विमेरहतः स्वधर्म पथम कृतं
पेम पठापधु पथ्य पारवंड मरस मजंसनि
जमनी भ्रेपाभुं दंश्रवतेपि च्यते॥१०॥ प हे
२ अर्धनामभागास्सरा वजीयो कादेवता धूर्ज
मो श्रुत कुरं इसको हियक मत बजापाऽ
भा० स्कं० ५ नाऽविषंवेस्र सजाव ग्रोने च्यूढ़ो

श्रुतान दमस्य दैगंतु ... राजन्य ... सोमाऽनि

वि. तैपाता द्धूं कैमध्ये गलकु ता म

राजहूपाद्देनें फलं नदु तीभमू॥ पञ्जोतस्यपारेमा चेरण प्रलदं है ताऽपेस गरा मजारदेवें जगमें वलें दे हमस्मगे॥ पहें गंगाजीकी ... केलाके हैं॥ भ्रमसें ...

भावकाल हाल यह है॥ भाव यतो वि नयतीपदापीस्कृति भावः॥

भा०स्कं०११ अ०११ श्लो०१३ संस्कारयत्राविच्छिन्नाः सद्विजोऽजगाद यदृजाध्ययनदानानि विहितानि द्विजन्मनाम् जन्मकर्मावदातानां मुक्तिपाश्रमश्चोदिताः॥ विप्रस्याध्ययनादीनि षडन्यस्याप्रतिग्रहः॥ राज्ञो वृत्तिः प्रजागोप्तुः अविप्राद्वा करादिभिः॥ वैश्यस्तु वार्ता वृत्तिश्च नित्यं ब्रह्मकुलानुगः॥ शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा वृत्तिश्च स्वामिनो भवेत्॥ जमेके तचारके मेवं जिवर्णिगे है॥ भा०स्कं०११ अ०१७ नव

नात॥ भा०स्कं०५ परस्य ...

पत्र ५५ श्लो० २२ के पन प्रस्तुति के
प्रस्तुति का श्लोकाविचार
तेज्जा अगति हैः स्वरूप स्तुति का प्रस्तु
आपद है ॥ पत्र ५८ पर प्रस्तुति का ध्याय समा
प्त हो गया ॥ उसी ५८ के पत्र से प्रारिपद
ध्याय का प्रारम्भ हुवा है पत्र ६३ पर समा
प्त ॥ श्री होरा प्रकाश ग्रंथ मे पत्र ६५ पर
प्रस्तुति का ध्याय का प्रारम्भ हुवा है पत्र ६४ प
र समाप्त हो गया है ॥ पत्र ६४ से भावफ
ला ध्याय का प्रारंभ हुवा है ॥ तनधन सह
जादि भावो के फल लिखे है ॥ ज्ञानम स्याम
... ... चक्र मे बी प्रस्तुती का ॥
ध्याय पत्र २९ पर लि० है ॥ और लग्नवारा ही
छोटि मे बी प्रस्तुति का ध्याय और ग्रहो के
फल लि० है ॥ लग्नवारा ही छोटि होडा
चक्र मे बी लिखे है ॥ और दुसरी बी ह
मारे पास लिखत की है ॥ ज्ञानम दू ।

पमसिद्धि तीयपरिच्छेदे पत्र प
पंचत्रिंशत्पाठप्रकार॥ दे संको लोसनो
क जो श्रो हं प्रम व शम्भो हं ग पोह व मभस
कद्रु म्च स्प श्री भगवती प्रीति द्वारा स वीप
श्रोनि दृ व क दी द्वीप धर्म न प त्रा द्व
पेज प कीर्ति लाभ प्रम ख च वि प
प्राधिसि धप धर्म प्रध प्रम ति स
प्र साथ सि ध प धर्म प्रध प्रम ति स ना
न वी प प नमः प्रपचवा मयासे स्वाय
निन व प प त्र प्रेस हं दे काल सेव का त
प्र वासनके क ते
श्री स प्रम दि

...वरी च कल्प प्रथम स्वस्ति वाचन करके
...श वरण पजमान से मातृ ना संकल्प करवे न...
...पजमान से वरण का संकल्प ... स मन्त्र
व रात्र पद्धति में यह लिखा है इस प्रकार
का वरण ॥ देश कालौ ... अमुक गो
त्रो हं अमुक शर्मा हं ... श्री महाकाली
महालक्ष्मी महासरस्वती ... श्री दुर्गा
प्रीत्यर्थं ... चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये
देवी माहात्म्य ... सकल कामना प्राप्त्ये
प्रमुक कार्य सिद्धये वा सावर्णिः ...
...पः ... सावर्णिर्भविता ...
...पुराणान्तर्गत मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत
देवी माहात्म्य पठनार्थं त्वामहं वृ
णे ॥ वृतोऽस्मीति ... वृ. यान
यह वरण का संकल्प यजमान ने ... कर
वरण नवरात्र पद्धति के ...
... धर्म ... विपुल धन राज्य संपत्ति का
... दुःख दारिद्र्य ... सर्व ...
... सम ... नि...



... माता ...